



ज्ञानविधि

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)

3049-2327(Print)

IIFS Impact Factor-6.125

Vol.-3; Issue-2 (Apr.-June) 2026

Page No.- 346-353

©2026 Gyanvidha

<https://journal.gyanvidha.com>

Author's :

1. विभा कुमारी

पी.एच.डी. शोधार्थी, कोटा वि. वि.

2. प्रो. सपना जोशी

शोध पर्यवेक्षक, कोटा वि. वि.

Corresponding Author :

विभा कुमारी

पी.एच.डी. शोधार्थी, कोटा वि. वि.

किशोरों में मीडिया साक्षरता और शैक्षिक उपलब्धि :

एक समीक्षात्मक अध्ययन

सारांश (Abstract) : इक्कीसवीं शताब्दी के डिजिटल युग में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी तथा जनसंचार माध्यमों ने मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। विशेष रूप से किशोर विद्यार्थी, जो विकास के संक्रमणकाल से गुजर रहे हैं, डिजिटल मीडिया के प्रभावों से अत्यधिक प्रभावित हो रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों में मीडिया साक्षरता एक महत्वपूर्ण क्षमता के रूप में उभरकर सामने आई है, जो व्यक्तियों को विभिन्न स्रोतों से प्राप्त सूचनाओं का विश्लेषण, मूल्यांकन तथा उनका विवेकपूर्ण एवं उत्तरदायित्वपूर्ण उपयोग करने में सक्षम बनाती है। प्रस्तुत शोध-पत्र "किशोरों में मीडिया साक्षरता और शैक्षिक उपलब्धि : एक समीक्षात्मक अध्ययन" उपलब्ध राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय साहित्य के आधार पर मीडिया साक्षरता एवं किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का विश्लेषण करता है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मीडिया साक्षरता विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक विकास, आलोचनात्मक चिंतन, अधिगम व्यवहार, रचनात्मकता तथा समस्या-समाधान क्षमता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। साथ ही, डिजिटल माध्यमों द्वारा उपलब्ध ज्ञान एवं अधिगम अवसरों के साथ-साथ भ्रामक सूचनाओं, साइबर बुलिंग, सोशल मीडिया की लत, ध्यान विचलन तथा शैक्षणिक एकाग्रता में कमी जैसी चुनौतियों को भी रेखांकित किया गया है। विभिन्न अध्ययनों के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल संसाधनों का संतुलित एवं प्रभावी उपयोग विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा समग्र विकास में सकारात्मक योगदान प्रदान करता है। अतः वर्तमान डिजिटल परिप्रेक्ष्य में किशोर विद्यार्थियों में उत्तरदायित्वपूर्ण डिजिटल व्यवहार, आलोचनात्मक चिंतन तथा 21वीं सदी के कौशलों के विकास के लिए मीडिया साक्षरता को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाया जाना आवश्यक है।

प्रस्तावना : इक्कीसवीं शताब्दी को डिजिटल युग के रूप में परिभाषित किया जाता है, जिसमें सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी तथा जनसंचार माध्यमों ने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। विशेष रूप से किशोर वर्ग, जो शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं बौद्धिक विकास के संक्रमणकाल से गुजरता है, डिजिटल मीडिया के प्रभावों से सर्वाधिक प्रभावित हो रहा है। इंटरनेट, सोशल मीडिया, ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफॉर्म, डिजिटल पुस्तकालय, यूट्यूब तथा अन्य इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों ने ज्ञान प्राप्ति के पारंपरिक स्वरूप को परिवर्तित कर दिया है। मार्शल मैकलुहान (Marshall McLuhan) के अनुसार "मीडिया केवल सूचना का माध्यम नहीं है, बल्कि यह विचारों, मूल्यों और व्यवहारों को निर्मित करने वाली एक सशक्त सामाजिक शक्ति है।"

वर्तमान समय में केवल सूचना प्राप्त करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि सूचना के स्रोत, उसकी विश्वसनीयता, उपयोगिता तथा उसके सामाजिक एवं नैतिक प्रभावों को समझने की क्षमता भी अत्यंत आवश्यक हो गई है। इसी क्षमता को मीडिया साक्षरता (Media Literacy) कहा जाता है। मीडिया साक्षरता व्यक्ति को विभिन्न प्रकार की सूचनाओं का विश्लेषण, मूल्यांकन एवं विवेकपूर्ण उपयोग करने की योग्यता प्रदान करती है।

यूनाइटेड नेशंस एजुकेशनल, साइंटिफिक एंड कल्चरल ऑर्गनाइजेशन (UNESCO) के अनुसार, मीडिया और सूचना साक्षरता (Media and Information Literacy) नागरिकों को सूचना के समुचित उपयोग, आलोचनात्मक चिंतन तथा जिम्मेदार डिजिटल सहभागिता के लिए सक्षम बनाती है। आज के डिजिटल परिवेश में यह क्षमता किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, अधिगम व्यवहार, रचनात्मकता तथा समस्या समाधान क्षमता को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारकों में से एक बन गई है।

एक ओर डिजिटल माध्यम विद्यार्थियों को व्यापक ज्ञान, त्वरित सूचना एवं नवीन अधिगम अवसर उपलब्ध करा रहे हैं, वहीं दूसरी ओर भ्रमक सूचनाएँ, साइबर बुलिंग, सोशल मीडिया की लत, ध्यान विचलन तथा शैक्षिक एकाग्रता में कमी जैसी चुनौतियाँ भी सामने आ रही हैं। ऐसी स्थिति में मीडिया साक्षरता का महत्व और अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि यह विद्यार्थियों में विवेकपूर्ण चयन, आलोचनात्मक दृष्टिकोण तथा उत्तरदायी डिजिटल व्यवहार का विकास करती है।

इसी संदर्भ में प्रस्तुत शोध-पत्र "किशोरों में मीडिया साक्षरता और शैक्षिक उपलब्धि : एक समीक्षात्मक अध्ययन" उपलब्ध साहित्य के आधार पर यह विश्लेषण करने का प्रयास करता है कि मीडिया साक्षरता किस प्रकार किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, संज्ञानात्मक विकास, आलोचनात्मक चिंतन तथा अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करती है। साथ ही यह अध्ययन मीडिया साक्षरता से संबंधित अवसरों, चुनौतियों एवं शैक्षिक निहितार्थों को भी स्पष्ट करने का प्रयास करता है।

मुख्य शब्द (Keywords) : मीडिया साक्षरता, किशोर विद्यार्थी, शैक्षिक उपलब्धि, डिजिटल मीडिया, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी, सोशल मीडिया, अधिगम व्यवहार, आलोचनात्मक चिंतन, डिजिटल साक्षरता, मीडिया शिक्षा।

साहित्य समीक्षा (Review of Literature) : मीडिया साक्षरता (Media Literacy) एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध को समझने के लिए राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनेक विद्वानों द्वारा अध्ययन किए गए हैं। इन अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि डिजिटल मीडिया, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी तथा मीडिया साक्षरता का किशोरों के संज्ञानात्मक, सामाजिक एवं शैक्षिक विकास पर व्यापक प्रभाव पड़ता है।

Potter (2004) ने अपनी पुस्तक Theory of Media Literacy: A Cognitive Approach में प्रतिपादित किया कि मीडिया साक्षरता व्यक्तियों को सूचना का विश्लेषण, मूल्यांकन एवं व्याख्या करने की क्षमता प्रदान करती है। उनके अनुसार मीडिया साक्षरता केवल सूचना प्राप्त करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आलोचनात्मक चिंतन एवं निर्णय क्षमता के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

Buckingham (2003) ने Media Education: Literacy, Learning and Contemporary Culture में मीडिया शिक्षा को आधुनिक शिक्षा व्यवस्था का एक अनिवार्य अंग बताया है। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि मीडिया साक्षरता विद्यार्थियों में आलोचनात्मक दृष्टिकोण, रचनात्मक अभिव्यक्ति तथा सामाजिक जागरूकता के विकास में सहायक सिद्ध होती है।

Livingstone (2004) ने अपने अध्ययन Media Literacy and the Challenge of New Information and Communication Technologies में स्पष्ट किया कि डिजिटल प्रौद्योगिकी के विकास के साथ मीडिया साक्षरता की आवश्यकता और अधिक बढ़ गई है। उन्होंने कहा कि नई सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकियाँ किशोरों के सीखने के स्वरूप को प्रभावित कर रही हैं और मीडिया साक्षरता उन्हें सूचनाओं के विवेकपूर्ण उपयोग में सक्षम बनाती है।

Hobbs (2010) ने अपनी पुस्तक Digital and Media Literacy: A Plan of Action में कहा कि मीडिया साक्षरता विद्यार्थियों में समालोचनात्मक चिंतन, संप्रेषण कौशल तथा नागरिक उत्तरदायित्व की भावना को विकसित करती है। उनके अनुसार डिजिटल युग में मीडिया साक्षरता को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाया जाना चाहिए।

Means, Toyama, Murphy एवं Baki (2013) ने ऑनलाइन एवं मिश्रित शिक्षण (Blended Learning) की प्रभावशीलता का अध्ययन करते हुए पाया कि डिजिटल शिक्षण संसाधनों का उचित उपयोग विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं अधिगम परिणामों में सकारात्मक वृद्धि करता है। उनके अध्ययन से यह निष्कर्ष सामने आया कि प्रौद्योगिकी आधारित अधिगम पारंपरिक शिक्षण की अपेक्षा अधिक प्रभावी हो सकता है।

Sung, Chang एवं Liu (2016) ने Computers and Education में प्रकाशित अपने अध्ययन में पाया कि मोबाइल उपकरणों एवं डिजिटल संसाधनों का उपयोग विद्यार्थियों की अधिगम उपलब्धि को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के समुचित उपयोग से विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि तथा अधिगम दक्षता में वृद्धि होती है।

Selwyn (2016) ने Education and Technology: Key Issues and Debates में शिक्षा में प्रौद्योगिकी के उपयोग से उत्पन्न होने वाली संभावनाओं और चुनौतियों का विश्लेषण किया। उन्होंने यह माना कि डिजिटल प्रौद्योगिकी शिक्षा को अधिक सुलभ एवं प्रभावी बनाती है, किन्तु इसके अत्यधिक उपयोग से ध्यान विचलन, सामाजिक अलगाव तथा डिजिटल असमानता जैसी समस्याएँ भी उत्पन्न हो सकती हैं।

UNESCO (2021) की Media and Information Literate Citizens: Think Critically, Click Wisely रिपोर्ट में यह प्रतिपादित किया गया कि मीडिया एवं सूचना साक्षरता नागरिकों में आलोचनात्मक चिंतन, सूचना की सत्यता की पहचान तथा उत्तरदायित्वपूर्ण डिजिटल व्यवहार का विकास करती है। रिपोर्ट के अनुसार, विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए मीडिया साक्षरता एक आवश्यक जीवन कौशल बन चुकी है।

OECD (2021) की रिपोर्ट 21st Century Readers: Developing Literacy Skills in a Digital World में पाया गया कि डिजिटल माध्यमों का प्रभावी एवं संतुलित उपयोग विद्यार्थियों की पठन क्षमता, समस्या समाधान कौशल तथा शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक योगदान देता है। हालांकि रिपोर्ट में यह भी इंगित किया गया कि अनियंत्रित डिजिटल उपयोग विद्यार्थियों की एकाग्रता एवं शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित कर सकता है।

भारतीय संदर्भ में **राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 (NEP-2020)** ने डिजिटल साक्षरता, मीडिया एवं सूचना प्रौद्योगिकी के समुचित उपयोग तथा विद्यार्थियों में 21वीं सदी के कौशलों के विकास पर विशेष बल दिया है। इसी प्रकार **NCERT (2021)** द्वारा विद्यालयी शिक्षा में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के उपयोग पर किए गए अध्ययन में पाया गया कि डिजिटल शिक्षण सामग्री एवं तकनीकी संसाधनों का उपयोग विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं अधिगम प्रेरणा में

सकारात्मक परिवर्तन लाता है।

शोध विधि (Research Methodology) : प्रस्तुत अध्ययन गुणात्मक (Qualitative) प्रकृति का एक समीक्षात्मक शोध (Review Study) है, जिसका उद्देश्य राजस्थान के संदर्भ में किशोर विद्यार्थियों में मीडिया साक्षरता तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन करना है। अध्ययन में द्वितीयक स्रोतों (Secondary Sources) का उपयोग किया गया है।

अध्ययन हेतु राजस्थान से संबंधित विभिन्न सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा प्रकाशित रिपोर्टें, शोध आलेखों, पुस्तकों तथा दस्तावेजों का विश्लेषण किया गया। इसके अंतर्गत राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (RBSE), राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद् (Rajasthan School Education Council), राजस्थान समग्र शिक्षा अभियान, शिक्षा विभाग, राजस्थान सरकार, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (NCERT), विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC), राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 (NEP-2020) तथा यूनेस्को (UNESCO) द्वारा प्रकाशित साहित्य का अध्ययन किया गया।

इसके अतिरिक्त राजस्थान के विभिन्न विश्वविद्यालयों, विशेष रूप से राजस्थान विश्वविद्यालय, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, कोटा विश्वविद्यालय तथा शैक्षिक अनुसंधान से संबंधित शोध-प्रबंधों (Shodhganga) में उपलब्ध अध्ययनों का विश्लेषण किया गया। शोध सामग्री के संकलन के लिए Google Scholar, Shodhganga, ResearchGate, ERIC तथा INFLIBNET जैसे ऑनलाइन डेटाबेस का उपयोग किया गया।

अध्ययन में वर्ष 2010 से 2025 के मध्य प्रकाशित साहित्य को सम्मिलित करते हुए विषयवस्तु विश्लेषण (Content Analysis Method) के माध्यम से उपलब्ध शोध निष्कर्षों का तुलनात्मक एवं व्याख्यात्मक अध्ययन किया गया। इस प्रकार प्राप्त तथ्यों के आधार पर राजस्थान के किशोर विद्यार्थियों में मीडिया साक्षरता की स्थिति, उसके शैक्षिक प्रभावों तथा उससे संबंधित चुनौतियों एवं संभावनाओं का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया।

निर्दर्शन (Delimitation of the Study)

1. प्रस्तुत अध्ययन राजस्थान राज्य तक सीमित है।
2. अध्ययन का केंद्र किशोर आयु वर्ग (13-19 वर्ष) के विद्यार्थी हैं।
3. अध्ययन में केवल प्रकाशित शोध आलेखों, पुस्तकों, रिपोर्टें एवं शोध-प्रबंधों को सम्मिलित किया गया है।
4. अध्ययन में प्राथमिक आँकड़ों (Primary Data) का उपयोग नहीं किया गया है।
5. अध्ययन का कालखंड 2010 से 2025 तक प्रकाशित साहित्य तक सीमित है।

शोध प्रविधि (Method of Analysis) : प्राप्त साहित्य का विश्लेषण विषयवस्तु विश्लेषण (Content Analysis) तथा वर्णनात्मक-विश्लेषणात्मक पद्धति (Descriptive-Analytical Method) के आधार पर किया गया है, जिससे राजस्थान के किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर मीडिया साक्षरता के प्रभाव का समग्र मूल्यांकन किया जा सके।

चर्चा एवं विश्लेषण (Discussion and Analysis) : वर्तमान डिजिटल युग में मीडिया साक्षरता (Media Literacy) किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों में से एक बनकर उभरी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, यूनेस्को (UNESCO), एनसीईआरटी (NCERT), यूडीआईएसई+ (UDISE+) तथा विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि मीडिया एवं सूचना प्रौद्योगिकी का संतुलित और विवेकपूर्ण उपयोग विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता, आलोचनात्मक चिंतन, सृजनात्मकता तथा शैक्षणिक उपलब्धि में सकारात्मक योगदान देता है।

1. राजस्थान में डिजिटल शिक्षा की स्थिति : राजस्थान सरकार द्वारा संचालित राजस्थान समग्र शिक्षा अभियान, ई-कक्षा, SMILE (Social Media Interface for Learning Engagement) कार्यक्रम तथा DIKSHA Portal के माध्यम से विद्यार्थियों तक डिजिटल सामग्री उपलब्ध कराई जा रही है। कोविड-19 महामारी के दौरान इन माध्यमों का व्यापक उपयोग किया गया, जिससे डिजिटल शिक्षा के महत्व में वृद्धि हुई।

सारणी 1 : राजस्थान में विद्यालयी शिक्षा की प्रमुख स्थिति (UDISE+ 2021-22)

संकेतक	राजस्थान
कुल विद्यालयों की संख्या	1,03,000+
माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय	19,000+
कुल विद्यार्थी	लगभग 1.35 करोड़
इंटरनेट सुविधा वाले विद्यालय	लगभग 24%
कंप्यूटर सुविधा वाले विद्यालय	लगभग 38%
स्मार्ट कक्षा वाले विद्यालय	लगभग 16%

स्रोत: UDISE+ Report 2021-22, Ministry of Education, Government of India

विश्लेषण : उपरोक्त आँकड़ों से स्पष्ट है कि राजस्थान में विद्यालयों की संख्या अधिक होने के बावजूद डिजिटल आधारभूत संरचना अभी भी सीमित है। इंटरनेट एवं स्मार्ट कक्षाओं की उपलब्धता में असमानता मीडिया साक्षरता के विकास में चुनौती प्रस्तुत करती है।

सारणी 2 : भारत में इंटरनेट उपयोग करने वाले किशोरों का प्रतिशत

वर्ष	प्रतिशत (%)
2015	27
2018	41
2020	54
2022	68
2024	78

स्रोत: Internet and Mobile Association of India (IAMAI) एवं Statista Reports

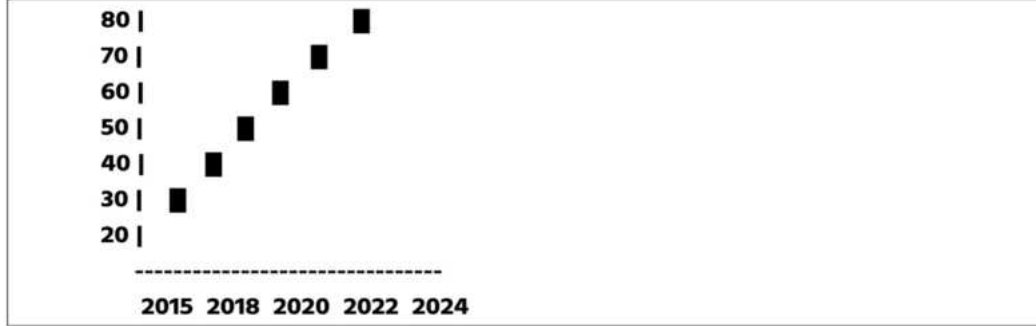
विश्लेषण : उपरोक्त आँकड़ों से स्पष्ट है कि इंटरनेट उपयोग करने वाले किशोरों की संख्या में निरंतर वृद्धि हुई है। इससे शैक्षणिक सामग्री तक पहुँच आसान हुई है, किंतु इसके साथ-साथ मीडिया साक्षरता की आवश्यकता भी बढ़ी है।

सारणी 3 : डिजिटल माध्यमों के शैक्षिक प्रभाव

सकारात्मक प्रभाव	नकारात्मक प्रभाव
अधिगम संसाधनों की उपलब्धता	सोशल मीडिया की लत
आलोचनात्मक चिंतन का विकास	ध्यान विचलन
स्व-निर्देशित अधिगम	साइबर बुलिंग
रचनात्मकता में वृद्धि	फर्जी सूचनाएँ
सहयोगात्मक अधिगम	शारीरिक निष्क्रियता

विश्लेषण : यह स्पष्ट है कि मीडिया एवं डिजिटल तकनीक के प्रभाव द्विपक्षीय हैं। यदि इनका उपयोग उचित मार्गदर्शन एवं मीडिया साक्षरता के साथ किया जाए तो यह शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होते हैं, अन्यथा इनके दुष्प्रभाव भी सामने आ सकते हैं।

चित्र 1 : किशोरों में इंटरनेट उपयोग की वृद्धि (%)



विश्लेषण : चित्र से स्पष्ट है कि पिछले एक दशक में किशोरों में इंटरनेट उपयोग तेजी से बढ़ा है। यह प्रवृत्ति डिजिटल शिक्षा के विस्तार को दर्शाती है तथा मीडिया साक्षरता की आवश्यकता को और अधिक महत्वपूर्ण बनाती है।



चित्र 2 : मीडिया साक्षरता के प्रमुख आयाम

चर्चा : Buckingham (2003), Hobbs (2010), Livingstone (2004) तथा UNESCO (2021) के अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि मीडिया साक्षरता केवल तकनीकी दक्षता नहीं, बल्कि आलोचनात्मक चिंतन, सूचना के मूल्यांकन तथा उत्तरदायित्वपूर्ण डिजिटल नागरिकता का विकास करने वाली क्षमता है। राजस्थान के संदर्भ में डिजिटल शिक्षा की पहुँच बढ़ी है, किन्तु ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के मध्य डिजिटल विभाजन (Digital Divide) अभी भी विद्यमान है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 तथा राजस्थान समग्र शिक्षा अभियान के अंतर्गत डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता में वृद्धि हुई है, जिससे विद्यार्थियों के लिए ज्ञान के नए अवसर उपलब्ध हुए हैं। तथापि, सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग, साइबर सुरक्षा की समस्याएँ तथा भ्रामक सूचनाओं का प्रसार किशोरों के शैक्षिक विकास के लिए चुनौतियाँ उत्पन्न कर रहे हैं।

अतः यह आवश्यक है कि मीडिया साक्षरता को विद्यालयी शिक्षा का अभिन्न अंग बनाया जाए, जिससे किशोर विद्यार्थी न केवल सूचना प्राप्त करने में सक्षम हों, बल्कि उसका समालोचनात्मक विश्लेषण कर विवेकपूर्ण एवं उत्तरदायित्वपूर्ण उपयोग भी कर सकें।

निष्कर्ष (Conclusion) : प्रस्तुत समीक्षात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान डिजिटल युग में मीडिया साक्षरता (Media Literacy) किशोर विद्यार्थियों के शैक्षिक, बौद्धिक एवं सामाजिक विकास का एक महत्वपूर्ण निर्धारक बनकर उभरी है। मीडिया साक्षरता केवल विभिन्न माध्यमों से प्राप्त सूचनाओं तक पहुँचने की क्षमता ही नहीं है,

बल्कि उन सूचनाओं का समालोचनात्मक विश्लेषण, मूल्यांकन एवं उत्तरदायित्वपूर्ण उपयोग करने की योग्यता भी प्रदान करती है। इस प्रकार यह विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, समस्या-समाधान क्षमता, रचनात्मकता तथा डिजिटल नागरिकता के विकास में सहायक सिद्ध होती है।

साहित्य समीक्षा से यह तथ्य उभरकर सामने आया कि डिजिटल प्रौद्योगिकी एवं मीडिया संसाधनों के समुचित उपयोग से किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, स्व-निर्देशित अधिगम, ज्ञानार्जन की दक्षता तथा संप्रेषण कौशल में वृद्धि होती है। दूसरी ओर सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग, साइबर बुलिंग, भ्रामक सूचनाएँ, डिजिटल असमानता तथा ध्यान विचलन जैसी समस्याएँ भी विद्यार्थियों के समक्ष नई चुनौतियाँ प्रस्तुत कर रही हैं।

राजस्थान के संदर्भ में उपलब्ध सरकारी आँकड़ों एवं रिपोर्टों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि राज्य में डिजिटल शिक्षा के विस्तार हेतु अनेक प्रयास किए जा रहे हैं, किन्तु विद्यालयों में इंटरनेट, स्मार्ट कक्षाओं तथा डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता में अभी भी क्षेत्रीय असमानताएँ विद्यमान हैं। ऐसी परिस्थितियों में मीडिया साक्षरता का विकास केवल तकनीकी आवश्यकता नहीं, बल्कि एक शैक्षिक एवं सामाजिक आवश्यकता बन गया है।

अतः यह कहा जा सकता है कि मीडिया साक्षरता किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि को सकारात्मक रूप से प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है। वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य केवल सूचना प्रदान करना नहीं, बल्कि ऐसे जागरूक, विवेकशील एवं उत्तरदायी डिजिटल नागरिकों का निर्माण करना है, जो मीडिया और प्रौद्योगिकी का रचनात्मक एवं नैतिक उपयोग करते हुए समाज और राष्ट्र के विकास में सार्थक योगदान दे सकें।

सुझाव (Suggestions)

1. **विद्यालयी पाठ्यक्रम में मीडिया साक्षरता को समाविष्ट किया जाए**, ताकि विद्यार्थियों में सूचना के समालोचनात्मक विश्लेषण एवं विवेकपूर्ण उपयोग की क्षमता विकसित हो सके।
2. **किशोर विद्यार्थियों के लिए डिजिटल सुरक्षा एवं साइबर जागरूकता कार्यक्रमों** का नियमित आयोजन किया जाना चाहिए।
3. **शिक्षकों के लिए मीडिया एवं डिजिटल साक्षरता संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रम** आयोजित किए जाएँ, जिससे वे विद्यार्थियों का उचित मार्गदर्शन कर सकें।
4. **अभिभावकों को भी डिजिटल मीडिया के प्रभावों के प्रति जागरूक** किया जाए, ताकि वे बच्चों के मीडिया उपयोग की सकारात्मक दिशा सुनिश्चित कर सकें।
5. **ग्रामीण एवं दूरस्थ क्षेत्रों के विद्यालयों में इंटरनेट एवं डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता बढ़ाई जाए**, जिससे डिजिटल असमानता को कम किया जा सके।
6. **राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप मीडिया एवं सूचना साक्षरता को कौशल-आधारित शिक्षा से जोड़ा जाए**, जिससे विद्यार्थियों में 21वीं सदी के आवश्यक कौशलों का विकास हो सके।
7. **विद्यार्थियों में तथ्य-जाँच (Fact-checking), स्रोतों की विश्वसनीयता की पहचान तथा उत्तरदायित्वपूर्ण डिजिटल व्यवहार** को प्रोत्साहित किया जाए।
8. **सोशल मीडिया के संतुलित एवं शैक्षिक उपयोग** के लिए विद्यालयों एवं परिवारों के स्तर पर स्पष्ट दिशा-निर्देश विकसित किए जाने चाहिए।
9. **मीडिया साक्षरता से संबंधित स्थानीय एवं क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षण सामग्री** विकसित की जानी चाहिए, जिससे अधिकाधिक विद्यार्थियों तक इसकी पहुँच सुनिश्चित हो सके।
10. **राजस्थान के विद्यालयों में मीडिया साक्षरता के स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध पर अनुभवजन्य (Empirical) शोध** को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

संदर्भ (References) :

1. Buckingham, D. (2003). *Media Education: Literacy, Learning and Contemporary Culture*. Cambridge: Polity Press.
2. Hobbs, R. (2010). *Digital and Media Literacy: A Plan of Action*. Washington, DC: Aspen Institute.
3. Livingstone, S. (2004). Media Literacy and the Challenge of New Information and Communication Technologies. *The Communication Review*, 7(1), 3–14.
4. Means, B., Toyama, Y., Murphy, R., & Baki, M. (2013). The Effectiveness of Online and Blended Learning: A Meta-Analysis of the Empirical Literature. *Teachers College Record*, 115(3), 1–47.
5. National Education Policy. (2020). *National Education Policy 2020*. New Delhi: Ministry of Education, Government of India.
6. NCERT. (2021). *Impact of ICT on School Education*. New Delhi: National Council of Educational Research and Training.
7. OECD. (2021). *21st Century Readers: Developing Literacy Skills in a Digital World*. Paris: OECD Publishing.
8. Potter, W. J. (2004). *Theory of Media Literacy: A Cognitive Approach*. Thousand Oaks, CA: Sage Publications.
9. Selwyn, N. (2016). *Education and Technology: Key Issues and Debates*. London: Bloomsbury Publishing.
10. Sung, Y. T., Chang, K. E., & Liu, T. C. (2016). The Effects of Integrating Mobile Devices with Teaching and Learning on Students' Learning Performance: A Meta-Analysis and Research Synthesis. *Computers & Education*, 94, 252–275.
11. UNESCO. (2021). *Media and Information Literate Citizens: Think Critically, Click Wisely*. Paris: UNESCO.
12. UNESCO. (2023). *Global Education Monitoring Report: Technology in Education – A Tool on Whose Terms?* Paris: UNESCO.
13. Ministry of Education, Government of India. (2022). *Unified District Information System for Education Plus (UDISE+) Report 2021–22*. New Delhi: Department of School Education and Literacy.
14. Internet and Mobile Association of India (IAMAI). (2023). *Digital in India Report*. Mumbai: IAMAI.
15. Statista. (2024). *Internet Usage among Adolescents in India*. Retrieved from <https://www.statista.com>

•